© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

राष्ट्रीय चेतना में बिहारी रियासतों का योगदान

सुप्रिता कुमारी
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग,
भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा (बिहार)

राष्ट्रीय चेतना की जागृति में भारत के सभी रियासती घरानों की भूमिका सहस्रपूर्ण एवं महत्वपूर्ण रही है। चौथे दशक के मध्य में परस्पर जुड़े हुए दो घटनाक्रमों ने रियासतों के तत्कालीन हालात को काफी प्रभावित किया। पहला भारत सरकार अधिनियम, 1935 द्वारा अधिनियम संविधानिक रूप से देशी रियासतों को शेष भारत (ब्रिटिश इण्डिया) से जोड़ने की योजना थी। इन्हें मिलाकर भारत को एक संघीय स्वरूप प्रदान करने की योजना थी। संघीय विधानमण्डल में रियासतों को प्रतिनिधित्व मिलना था, लेकिन चाल यह थी कि रियासतों से प्रतिनिधि चुनने का अधिकार खुद राजा–महाराजाओं को दिया जाये। रियासतों से चुने गए प्रतिनिधियों की संख्या संघीय विधानमंडल की कुल सदस्य संख्या की एक तिहाई थी। अंग्रेजी हुकूमत का इरादा राजाओं को इन एजेन्टों को राष्ट्रीय आन्दोलन के खिलाफ इस्तेमाल करना था। 'काँग्रेस राज्य इन कॉन्फ्रेंस' तथा अन्य संगठनों ने अंग्रेजी हुकूमत के इस चाल को भाँप लिया था। इसलिए उन्होंने माँग की कि रियासतों का प्रतिनिधित्व करने के लिए जनता खुद अपने प्रतिनिधि चुने। राजाओं के एजेन्ट जनता के प्रतिनिधि नहीं हो सकते। यह माँग इस बात का प्रमाण था कि रियासतों में भी अब जनता लोकतांत्रिक सरकार के लिए कसमसाने लगी थी। अंत में यह योजना लागू ही नहीं हुई।

दूसरी घटना थी 1937 ई0 में ब्रिटिश इण्डिया में अनेक प्रांतों में काँग्रेसी सरकारों का गठन। काँग्रेस के सत्ता में आने से रियासतों की जनता में एक नया आत्मविश्वास जगा, नई उम्मीदें जगी और राजनीतिक गतिविधियाँ तेज हुई। इस बदलाव को राजाओं ने भी महसूस किया काँग्रेस अब महज विपक्ष की भूमिका निभाने वाली पार्टी नहीं रह गई थी, अब यह सत्ता में थी और काँग्रेसी सरकारें अपने प्रान्तों के आस–पास के रियासतों की राजनीतिक घटनाओं को प्रभावित कर

सकती थी। वर्ष 1938–39 देशी रियासतों में नई चेतना के वर्ष थे। उत्तरदायी सरकार और अनेक सुधारों की माँग को लेकर कई आन्दोलन छिड़े पर संगठन नहीं बना था, बड़ी संख्या में प्रजामंडलों का गठन हुआ। जयपुर, कश्मीर, राजकोट, पटियाला, हैदराबाद, मैसूर, त्रावणकोर, उड़ीसा आदि रियासतों में बड़े पैमाने पर संघर्ष शुरू हुआ। इन संघर्षों का नेतृत्व करने वालों में से कईयों ने बाद में भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जैसे शेख अब्दुल्ला, यू.एन.ढ़ेबर, जमना लाल बजाज, जय नरायण व्यास इत्यादि।

1939 ई0 के आरम्भ में भारतीय रियासतों में लोकप्रिय आन्दोलन ने काफी जोर पकड़ा और गाँधी जी को भी नियंत्रित जनसंघर्ष को पहली बार रियासतों में लागू करने का मौका मिला। कुछ आन्दोलनों में सरदार पटेल और जमना लाल बजाज ने नेतृत्व संभाला था तो कुछ में महात्मा गाँधी, पंडित जवाहर लाल नेहरू और आचार्य कृपलानी ने हस्तक्षेप किया। कुछ घटनाओं में संवैधानिक उद्वेग था तो कुछ में नागरिक प्रतिरोध या सविनय अवज्ञा। भारतीय रियासतों में हो रहे राजनीतिक आन्दोलनों को 1937 ई0 में नवगठित काँग्रेस सरकार की सहानुभूति और नैतिक सहयोग प्राप्त था।

सन् 1938–39 के साल में हमारे देश के अधिकांश देशी राज्यों में दायित्वपूर्ण शासन हासिल करने के जबरदस्त आन्दोलन हुए और उनमें सरदार ने प्रमुख भाग लिया, यह हम देख चुके हैं। तीन बार तो बड़ौदा में, अमरेली से राजकोट लौटते समय और भावनगर में...'' उनकी जान पर भी जोखिम आई। परन्तु ईश्वर ने उनकी रक्षा कर ली। इन आन्दोलनों का परिणाम तत्काल तो हमारे लिए संतोषजनक नहीं हुआ। परंतु उनके कारण देशी राज्यों की प्रजा का अैर देशी राजाओं का व्यक्तिगत परिचय सरदार को हुआ और देशी राजा भी सरदार को अच्छी तरह पहचान सके। यह चीज 1947 में स्वतंत्रता मिल जाने के बाद देशी राज्यों का प्रश्न हल करने में सरदार के बहुत काम आयी। राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन राजनीतिक जागरण एवं देश में गाँधीजी के नेतृत्व में चल रहे स्वतंत्रता संघर्ष का परिणाम था। इसकी पृष्ठभूमि राजस्थान राज्यों में चल रहे कृषक आन्दोलन थे। कृषक आन्दोलन उस व्यापक असंतोष के अंग थे, जो प्रचलित राजनीतिक और आर्थिक ढाँचे में विद्यमान था। कृषकों ने विभिन्न आंदोलनों के माध्यम से उन समय के ठिकानेदारों और जागीरदारों के अत्याचारों को तथा कृषि संबंध में आये विचार को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जागीरदारी व्यवस्था उस पैतृकवादी स्वरूप को छोड़कर शोषणात्मक स्वरूप ले चुकी थी। प्रचलित व्यवस्था में असंतोष व्यापक था। इसलिए 1920 ई0 के पश्चात् राजनीतिक अधिकारों और सामाजिक सुधारों से संबंधित संस्थाओं की स्थापना हुई। इन संस्थाओं ने मौलिक अधिकारों से वंचित होने की स्थिति की अधिक चर्चा की।

सन् 1942 ई0 के क्रिप्स प्रस्तावों को ब्रिटिश भारत की सभी राजनीतिक पार्टियों ने ठुकरा दिया। काँग्रेस पार्टी ने प्रतिरक्षा के प्रश्न के अलावा इस बात के लिए भी इन प्रस्तावों को ठुकरा दिया, क्योंकि भारतीय रियासत के 9 करोड़ लोगों

के लिए इसमें कुछ भी नहीं कहा गया। भारतीय रियासतों के भारत में विलय न करने पर यह संभव था कि देश बाल्कन प्रायद्वीप की तरह विखंडित हो जाता जिससे भारतीय एकता और अखंडता को खतरा हो सकता था। राजाओं ने भी क्रिप्स प्रस्तावों को स्वीकार नहीं किया। उन्हें इस बात की आशंका थी कि भविष्य में ब्रिटिश सरकार उनके साथ कैसा व्यवहार करेगी। यहाँ तक कि सरकार के राजनीतिक विभाग ने यह सुझाव दिया कि यह उन शासकों के हित में है कि उन्हें जिस तरह का सांविधानिक तंत्र बेहतर लगे। सुधार लागू करें, ब्रिटिश सरकार ने इस दौरान रियासतों पर दबाव डाला हालांकि इसका ज्यादा असर नहीं हुआ पर नरेन्द्र मण्डल के चांसलर ने रियासतों के द्वारा की गई। ''कल्याणकारी गतिविधियों'' की एक सूची दी। द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त होने तक ए.आई.एस.पी.सी. कांग्रेस के साथ पहचान बनाए रखने के कारण शक्तिशाली हो गई थी और ''भारत छोड़ों'' आन्दोलन में इसके कार्यकर्ताओं को अनुभव भी प्राप्त हो गया था। अतः इन रियासतों के लिए यह अवश्यभावी हो गया कि 1939 ई0 में प्रजा के द्वारा लोकप्रिय आंदोलन की संभावना बढ़ जाती। जनवरी 1946 ई0 में नरेन्द्र मण्डल अधिवेशन में अनेक सांविधानिक सुधारों का प्रस्ताव पारित किया गया। सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार किया गया कि मौलिक सुधारों का प्रस्ताव पारित किया गया। सिद्धान्त रूप में यह स्वीकार किया गया कि मौलिक अधिकारों को मान्यता दी जाए, स्वतंत्रता न्यायपालिका हो, प्रशासनिक बजट को असैनिक सूची से अलग किया जाए उचित एवं समान कर–प्रणाली को सख्ती से लागू किया जाए इत्यादि।

प्रजामण्डल आंदोलन का सामाजिक जनधार काफी व्याप्त था। समाज के सभी शोषित वर्गों/लोगों में आंदोलन में भाग लिया। आंदोलन का नेतृत्व शिक्षित मध्यमवर्गीय नेताओं के द्वारा किया गया चाहे वे काँग्रेसी विचारधारा के हों या समाजवादी या साम्यवादी नेता।

संदर्भ सूची :

1. आर.एल. हांडा, हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम स्ट्रगल इन प्रिंसली स्टेट्स में उद्धृत, सी.ए. एन, दिल्ली, 1968, पृ.11.
2. सुमित सरकार, आधुनिक भारत, नई दिल्ली, 1996, पृ.386
3. विपिन चन्द्रा, भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, नई दिल्ली.
4. सीता रमैय्या, पट्टाभि, कांग्रेस का संक्षिप्त इतिहास, नई दिल्ली, पृ. 300.
5. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 17 मई 1939.
6. सरदार पटेल द्वारा गाँधी जी को भेजे गए तार से उद्धृत अंश 14 मई 1939
7. बी.एन. पाण्डे, द इण्डियन नेशनल मुवमेंट (1885–1947), सेलेक्ट डाकुमेंट्स, लंदन, 1979, पृ. 387.
8. होम पोलिटिक रिपोर्ट्स फाइल संख्या–7/5/39, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली